NEXT IAS

दैनिक समसामयिकी विश्लेषण

समय: 45 मिनट

दिनाँक: 19-09-2025

विषय सूची

» सऊदी अरब और पाकिस्तान के मध्य रक्षा समझौता
» लैंगिक अंतर की समाप्ति, गरीबी उन्मूलन की कुंजी
» भारत ने दोहा हमले की निंदा क्यों की?
» व्यापार वृद्धि के उत्प्रेरक के रूप में कृत्रिम बुद्धिमत्ता
» एनालॉग प्रयोग: पृथ्वी पर अंतरिक्ष का अनुकरण करने का प्रयास
» सेना द्वारा ड्रोन की संख्या में वृद्धि

संक्षिप्त समाचार

» सात प्राकृतिक विरासत स्थल यूनेस्को की संभावित सूची में सम्मिलित
» स्वस्थ नारी सशक्त परिवार अभियान
» ECI द्वारा EVM मतपत्रों को अधिक पठनीय बनाने के लिए दिशानिर्देशों में संशोधन
» अंतर्राष्ट्रीय आपराधिक न्यायालय
» ब्लू पोर्ट्स
» भारत-AI प्रभाव शिखर सम्मेलन 2026
» डीपसीक-R1 AI मॉडल की रिइनफोर्समेंट लर्निंग
» पीले-कलगी वाले कॉकटू((Yellow-crested Cockatoos))
» पैसिफिक रीच अभ्यास

सऊदी अरब और पाकिस्तान के मध्य रक्षा समझौता

संदर्भ

- हाल ही में, पाकिस्तान ने सऊदी अरब के साथ एक पारस्परिक रक्षा समझौते पर हस्ताक्षर किए, भारत ने कहा है कि वह इस घटनाक्रम से अवगत है और उसने "व्यापक राष्ट्रीय सुरक्षा" के प्रति अपनी प्रतिबद्धता दोहराई है।

परिचय

- **बैठक की पृष्ठभूमि:** यह समझौता कतर द्वारा आयोजित अरब और मुस्लिम देशों के आपातकालीन शिखर सम्मेलन के बाद किया गया, जो इज़राइल द्वारा हमास नेताओं पर सैन्य हमलों के बाद हुआ था।
  - इस बैठक में अरब लीग और इस्लामी सहयोग संगठन (OIC) के लगभग 60 सदस्य देशों ने भाग लिया।
- **समझौता:** इसे "रणनीतिक पारस्परिक रक्षा समझौता" कहा गया है, जिसमें कहा गया है कि "किसी एक देश पर कोई भी आक्रमण दोनों देशों पर आक्रमण माना जाएगा।"
  - इसका उद्देश्य दोनों देशों के बीच रक्षा सहयोग के पहलुओं को विकसित करना और किसी भी आक्रमण के विरुद्ध संयुक्त प्रतिरोध को सुदृढ़ करना है।

समझौते के पीछे का तर्क

- **समय:** यह समझौता इज़राइल द्वारा कतर पर हमास नेतृत्व को निशाना बनाकर किए गए हमले के बाद एक संदेश के रूप में देखा जा रहा है।
- **क्षेत्रीय चिंता:** इज़राइल की ईरान, लेबनान, सीरिया, यमन और अब कतर में बढ़ती गतिविधियों ने अरब देशों को चिंतित कर दिया है।
- **अमेरिका की विश्वसनीयता पर प्रश्न:** कथित तौर पर अमेरिका द्वारा समर्थित इस हमले से खाड़ी देशों को अमेरिका के विश्वसनीय सुरक्षा गारंटर होने पर संदेह होने लगा।
- **परमाणु हथियार का डर:** खाड़ी देशों को पता है कि इज़राइल मध्य पूर्व का एकमात्र परमाणु-संपन्न देश है, जिससे उनकी असुरक्षा की भावना बढ़ती है।
- **इस्लामी एकता:** सऊदी–पाकिस्तान समझौता व्यापक इस्लामी गुट में एकता का प्रदर्शन करता है।

भारत की प्रतिक्रिया

- भारत के विदेश मंत्रालय ने कहा कि वह पाकिस्तान और सऊदी अरब द्वारा ऐसे समझौते पर विचार करने से अवगत था।
- भारत ने कहा कि वह इस विकास के राष्ट्रीय सुरक्षा और क्षेत्रीय व वैश्विक स्थिरता पर प्रभावों का अध्ययन करेगा।
- सरकार भारत के राष्ट्रीय हितों की रक्षा करने और सभी क्षेत्रों में समग्र राष्ट्रीय सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए प्रतिबद्ध है।

सऊदी अरब के भारत और पाकिस्तान के साथ संबंध

पाकिस्तान के साथ:

- पाकिस्तान और सऊदी अरब के बीच सैन्य सहयोग का लंबा इतिहास है।
  - 1960 के दशक के अंत में पाकिस्तानी सैनिकों को सऊदी अरब में तैनात किया गया था और उन्होंने 1979 में ग्रैंड मस्जिद को पुनः प्राप्त करने में सहायता की थी।
  - 1982 में दोनों देशों ने द्विपक्षीय सुरक्षा सहयोग समझौते पर हस्ताक्षर किए, जिससे प्रशिक्षण, सलाहकार भूमिकाएं और तैनाती संस्थागत रूप से स्थापित हुईं।
  - सऊदी अरब पाकिस्तान निर्मित हथियारों का प्रमुख खरीदार बन गया, जबकि पाकिस्तानी कर्मियों ने सऊदी वायु सेना को प्रशिक्षित किया।
  - 2025 में रियाद में संयुक्त सैन्य सहयोग समिति ने प्रशिक्षण, आदान-प्रदान और संयुक्त अभ्यासों को बढ़ाने का संकल्प लिया।

भारत के साथ:

- **व्यापार और अर्थव्यवस्था:** भारत सऊदी अरब का दूसरा सबसे बड़ा व्यापार भागीदार है, जबकि सऊदी अरब भारत का पाँचवाँ सबसे बड़ा है।

- FY 2023–24 में द्विपक्षीय व्यापार USD 42.98 बिलियन रहा (भारत का निर्यात: USD 11.56 बिलियन, आयात: USD 31.42 बिलियन)।
- **रणनीतिक ढांचा:** दिल्ली घोषणा (2006) और रियाद घोषणा (2010) ने संबंधों को रणनीतिक साझेदारी में बदल दिया।
- **उच्च स्तरीय मान्यता:** 2016 में पीएम मोदी को सऊदी अरब का सर्वोच्च नागरिक सम्मान, किंग अब्दुलअज़ीज़ सैश प्राप्त हुआ।
- **सुरक्षा और कूटनीति:** मोदी की यात्रा के दौरान सऊदी अरब ने पहलगाम हमले की निंदा की।
  - उसने भारत के अनुच्छेद 370 के निर्णय की तीखी आलोचना से बचाव किया और प्रायः भारत और पाकिस्तान के बीच मध्यस्थ की भूमिका निभाई है।

प्रमुख भू-राजनीतिक प्रभाव

- **ऐतिहासिक कदम:** यह पाकिस्तान का दशकों में सबसे महत्वपूर्ण रक्षा समझौता है, जो उसे रणनीतिक और आर्थिक लाभ भी प्रदान करता है।
- **भारत-सऊदी संबंधों पर प्रभाव:** यह समझौता भारत–सऊदी अरब के बढ़ते रणनीतिक और आर्थिक संबंधों को प्रभावित कर सकता है।
- **संस्थागत भूमिका:** यह पाकिस्तान की पश्चिम एशिया की सुरक्षा संरचना में स्थिति को औपचारिक रूप देता है, जिससे उसे अधिक रणनीतिक महत्व मिलता है।
- **हथियार अधिग्रहण:** पाकिस्तान सऊदी वित्त पोषण का उपयोग करके अमेरिकी हथियार प्राप्त कर सकता है, क्योंकि वाशिंगटन इन्हें बेचने को तैयार लगता है।
- **संघर्ष में उलझाव:** यह समझौता पाकिस्तान को लाभ पहुंचाने के बजाय उसे मध्य पूर्व के लंबे युद्धों की ओर ले जा सकता है।

निष्कर्ष

- यह रक्षा समझौता एक प्रकार की रणनीतिक मुद्रा है, और इसका उद्देश्य भारत से अधिक इज़राइल को संदेश देना है।
- इसलिए, वास्तव में यह समझौता पाकिस्तान को सऊदी अरब के क्षेत्रीय संघर्षों से अधिक निकटता से जोड़ सकता है, बजाय इसके कि यह उसे किसी द्विपक्षीय तनाव से सुरक्षा प्रदान करे।

Source: TH

लैंगिक अंतर की समाप्ति, गरीबी उन्मूलन की कुंजी

संदर्भ

- संयुक्त राष्ट्र महिला और संयुक्त राष्ट्र DESA द्वारा जारी संयुक्त राष्ट्र जेंडर स्नैपशॉट 2025 में इस बात पर प्रकाश डाला गया है कि यदि तत्काल कार्रवाई नहीं की गई तो 2030 तक 351 मिलियन से अधिक महिलाएं और लड़कियां अत्यधिक गरीबी में रह सकती हैं।

मुख्य निष्कर्ष

- **स्थायी गरीबी:** महिला गरीबी 2020 से 10% पर स्थिर बनी हुई है। जलवायु परिवर्तन और संघर्ष कमजोरियों को बढ़ा रहे हैं।
- **कार्य और प्रतिनिधित्व:** महिलाएं पुरुषों की तुलना में 2.5 गुना अधिक समय बिना वेतन के घरेलू और देखभाल कार्यों में व्यतीत करती हैं। उनके पास विश्व भर में एक तिहाई से भी कम संसदीय सीटें हैं।
  - 102 देशों में आज तक कोई महिला राष्ट्राध्यक्ष या सरकार प्रमुख नहीं रही है।
- **डिजिटल अंतर:** 2024 में 70% पुरुषों ने इंटरनेट का उपयोग किया, जबकि महिलाओं में यह आंकड़ा 65% था।
  - इस अंतर को समाप्त करने से 3 करोड़ महिलाओं को गरीबी से बाहर निकाला जा सकता है, 343 मिलियन महिलाओं एवं लड़कियों को लाभ मिल सकता है, और 2030 तक वैश्विक GDP में $1.5 ट्रिलियन की वृद्धि हो सकती है।
- **खाद्य असुरक्षा और हिंसा:** 2024 में 6.4 करोड़ अधिक महिलाएं पुरुषों की तुलना में खाद्य असुरक्षा का सामना कर रही थीं।

- 15–49 वर्ष की उम्र की प्रत्येक 8 में से 1 महिला ने विगत वर्ष अंतरंग साथी द्वारा हिंसा का अनुभव किया।
- 18.6% युवा महिलाओं की शादी 18 वर्ष से पहले हो गई (2014 में यह आंकड़ा 22% था)।
- 2024 में 676 मिलियन महिलाएं और लड़कियां घातक संघर्ष के 50 किमी के दायरे में रह रही थीं, जो 1990 के दशक के बाद सबसे अधिक है।

- **जलवायु परिवर्तन:** जलवायु परिवर्तन की सबसे खराब स्थिति में 2050 तक 158 मिलियन अतिरिक्त महिलाएं गरीबी में जा सकती हैं।

भारत-विशिष्ट आयाम

- **महिला श्रम बल भागीदारी दर (FLFPR):** 2023 में लगभग 37% (ILO), जो दक्षिण एशिया में सबसे कम है।
- **राजनीतिक प्रतिनिधित्व:** लोकसभा में महिलाओं की हिस्सेदारी लगभग 15% है, हालांकि महिला आरक्षण अधिनियम 2023 में 33% सीटों का वादा किया गया है।
- **शिक्षा:** स्कूल नामांकन में लैंगिक समानता प्राप्त हो गई है, लेकिन माध्यमिक स्तर पर लड़कियों की ड्रॉपआउट दर बढ़ जाती है, जिसका कारण है बाल विवाह, सुरक्षा और सामाजिक मान्यताएं।
- **डिजिटल अंतर:** NFHS-5 के अनुसार, केवल 33% महिलाएं इंटरनेट का उपयोग करती हैं, जबकि पुरुषों में यह आंकड़ा 57% है।
  - महिलाओं के विरुद्ध हिंसा व्यापक रूप से फैली हुई है; NCRB 2022 के आंकड़ों के अनुसार महिलाओं के विरुद्ध अपराध के 4 लाख से अधिक मामले दर्ज किए गए।

लैंगिक समानता के लिए वैश्विक प्रयास

- **संयुक्त राष्ट्र सतत विकास लक्ष्य 5:** इसका उद्देश्य लैंगिक समानता प्राप्त करना और सभी महिलाओं एवं लड़कियों को सशक्त बनाना है।
- **बीजिंग घोषणा और कार्य योजना:** यह 1995 में महिलाओं पर चौथे विश्व सम्मेलन में अपनाया गया एक ऐतिहासिक संयुक्त राष्ट्र प्रस्ताव है, जो लैंगिक समानता और महिलाओं व लड़कियों को सशक्त बनाने के लिए एक व्यापक वैश्विक खाका प्रदान करता है।
- **महिलाओं के विरुद्ध सभी प्रकार के भेदभाव के उन्मूलन पर कन्वेंशन (CEDAW):** यह नीति सुधारों और लैंगिक भेदभाव के विरुद्ध कानूनी सुरक्षा को प्रोत्साहित करता है।

भारत की लैंगिक समानता की पहलें

- **पोषण अभियान:** इस मिशन का उद्देश्य बच्चों, गर्भवती महिलाओं और स्तनपान कराने वाली माताओं के पोषण परिणामों में सुधार करना है।
- **महिलाओं के लिए डिजिटल साक्षरता कार्यक्रम:** यह प्रधानमंत्री ग्रामीण डिजिटल साक्षरता अभियान (PMGDISHA) का हिस्सा है और महिलाओं को ई-गवर्नेंस सेवाओं एवं वित्तीय प्लेटफार्मों तक पहुंच प्रदान कर डिजिटल अर्थव्यवस्था में भाग लेने के लिए सशक्त बनाता है।
- **वन स्टॉप सेंटर योजना (सखी केंद्र):** इसका उद्देश्य हिंसा से प्रभावित महिलाओं को एक ही छत के नीचे पुलिस सहायता, चिकित्सा सहायता, कानूनी सहायता और परामर्श, मनो-सामाजिक परामर्श, अस्थायी आश्रय आदि जैसी एकीकृत सेवाएं प्रदान करना है।
- **वुमन इन साइंस एंड इंजीनियरिंग–किरण (WISE KIRAN) कार्यक्रम:** इसने 2018 से 2023 तक लगभग 1,962 महिला वैज्ञानिकों को समर्थन प्रदान किया है।
- **मातृत्व लाभ (संशोधन) अधिनियम, 2017:** यह निजी क्षेत्र और सरकारी क्षेत्र में कार्यरत महिलाओं को 26 सप्ताह का सवेतन मातृत्व अवकाश प्रदान करता है।
- **नारी शक्ति वंदन अधिनियम, 2023:** यह लोकसभा, राज्य विधानसभाओं और दिल्ली विधानसभा में महिलाओं के लिए कुल सीटों की एक-तिहाई आरक्षित करने का प्रस्ताव करता है।

संयुक्त राष्ट्र महिला

- संयुक्त राष्ट्र महिला संयुक्त राष्ट्र की वह इकाई है जो लैंगिक समानता और महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए समर्पित है।
- महिलाओं एवं लड़कियों के लिए एक वैश्विक चैंपियन, संयुक्त राष्ट्र महिला की स्थापना 2010 में उनकी आवश्यकताओं को पूरा करने की प्रगति को तीव्र करने के लिए की गई थी।
- मुख्यालय: न्यूयॉर्क।

संयुक्त राष्ट्र DESA

- UNDESA, या संयुक्त राष्ट्र आर्थिक और सामाजिक मामलों का विभाग, संयुक्त राष्ट्र की एक संस्था है जो 2030 सतत विकास एजेंडा एवं 17 सतत विकास लक्ष्यों (SDGs) पर केंद्रित संयुक्त राष्ट्र के विकास प्रयासों का समर्थन करती है।
- यह वैश्विक विकास नीतियों और राष्ट्रीय कार्रवाइयों के बीच एक महत्वपूर्ण कड़ी के रूप में कार्य करता है, विशेष रूप से विकासशील देशों के लिए विश्लेषण, डेटा एवं क्षमता निर्माण प्रदान करता है।

Source: DTE

भारत ने दोहा हमले की निंदा क्यों की?

संदर्भ

- दोहा में इज़राइल की बमबारी की भारत द्वारा हाल ही में की गई निंदा, अन्य देशों में इज़राइली अभियानों पर भारत की पहले की नरम प्रतिक्रियाओं से एक परिवर्तन को दर्शाती है।

परिचय

- इज़राइली रक्षा बलों (IDF) ने कतर के दोहा में एक घर पर बमबारी की, जहां बताया गया कि हमास नेता अमेरिका द्वारा प्रस्तावित युद्धविराम योजना पर बैठक कर रहे थे।
- इज़राइल के प्रधानमंत्री नेतन्याहू ने इस हमले को “औचित्यपूर्ण” बताया तथा कतर पर “हमास कार्यकर्ताओं को शरण और वित्तीय सहायता देने” का आरोप लगाया।
- भारत ने कतर की संप्रभुता के उल्लंघन की निंदा की।
  - यह बयान क्षेत्र के अन्य देशों जैसे लेबनान, यमन, ट्यूनीशिया, सीरिया और ईरान में इज़राइल की बमबारी पर भारत की प्रतिक्रियाओं से स्पष्ट रूप से भिन्न है।

भारत के दृष्टिकोण के कारण

- **ऊर्जा सुरक्षा:** कतर भारत के लिए एक महत्वपूर्ण एलएनजी आपूर्तिकर्ता है, जिसके साथ दीर्घकालिक अनुबंध हैं।
  - दोहा में किसी भी प्रकार की उथल-पुथल भारत की ऊर्जा स्थिरता को सीधे खतरे में डालती है।
- **बड़ी प्रवासी जनसंख्या:** कतर में 8 लाख से अधिक भारतीय रहते हैं, जो प्रेषण में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं।
  - प्रवासी समुदायों की सुरक्षा भारत की खाड़ी नीति में हमेशा प्राथमिकता रही है।
- **रणनीतिक संतुलन:** भारत के इज़राइल के साथ सुदृढ़ रक्षा और तकनीकी संबंध हैं, लेकिन अरब खाड़ी देशों के साथ गहरे आर्थिक एवं सांस्कृतिक संबंध भी हैं।
  - बयान इज़राइल की प्रत्यक्ष निंदा से वचाव किया है, लेकिन अस्थिरता फैलाने वाली कार्रवाइयों पर असंतोष व्यक्त करता है।
- **भू-राजनीतिक गणनाएं:** अमेरिका को खाड़ी क्षेत्र में अपनी सुरक्षा भूमिका कम करते हुए देखा जा रहा है।
  - भारत को उन GCC देशों के साथ सद्भाव बनाए रखना आवश्यक है जो संयुक्त रक्षा तंत्र तलाश रहे हैं।
- **बहुपक्षीय दृष्टिकोण के साथ संगति:** भारत ने हाल ही में UNGA में फिलिस्तीन के लिए दो-राज्य समाधान का समर्थन किया है और उसका दृष्टिकोण इसी के अनुरूप है।

भारत के दृष्टिकोण के प्रभाव

- **कतर और GCC के साथ संबंधों को सुदृढ़ करता है:** खाड़ी देशों को संकेत देता है कि भारत उनकी सुरक्षा चिंताओं को महत्व देता है।
  - यह ऊर्जा अनुबंधों, व्यापार और प्रवासी हितों की रक्षा करेगा।

- **इज़राइल के साथ संबंध बनाए रखता है:** भारत ने प्रत्यक्ष निंदा से स्वयं का बचाव किया, लेकिन यह भी स्पष्ट किया कि अंधाधुंध सैन्य कार्रवाई स्वीकार्य नहीं है।
- **भारत की उत्तरदायी शक्ति की छवि को बढ़ावा देता है:** हमले को "शांति और स्थिरता के लिए खतरा" कहकर भारत ने स्वयं को पश्चिम एशिया में एक संतुलित, शांति-प्रिय शक्ति के रूप में प्रस्तुत किया।
    - यह अरब लीग, OIC और UNGA जैसे मंचों पर भारत की विश्वसनीयता को बढ़ाता है।
- **रणनीतिक स्वायत्तता की अभिव्यक्ति:** यह दर्शाता है कि भारत अंधाधुंध रूप से इज़राइल या अमेरिका के दृष्टिकोण का समर्थन नहीं कर रहा है।
    - यह बहुध्रुवीय पश्चिम एशिया में भारत के बहुपक्षीय जुड़ाव के दृष्टिकोण को सुदृढ़ करता है।
- **भारत की पश्चिम एशिया नीति पर प्रभाव इज़राइल और अरब विश्व के बीच संतुलन:** इज़राइल के साथ भारत के करीबी संबंध अब अरब गुट के साथ तनाव का सामना कर रहे हैं; गाजा पर चुप्पी, जहाँ भारी नागरिक हताहत हुए हैं, सद्भावना को हानि पहुँचा रही है।
    - UNGA में दो-राज्य समाधान के पक्ष में भारत का अंतिम मतदान दर्शाता है कि उसे इज़राइल के साथ संबंधों को संतुलित करना होगा, साथ ही अरब संवेदनशीलताओं का ध्यान रखना होगा।
- **ऊर्जा सुरक्षा और प्रवासी चिंताएं:** ऊर्जा विविधीकरण और प्रवासी सुरक्षा भारत की पश्चिम एशिया नीति के प्रमुख चालक बने रहेंगे।
- **क्षेत्रीय बहुपक्षीयता और भारत की भागीदारी:** अरब लीग–OIC की निंदा और GCC की रक्षा वार्ताएं दर्शाती हैं कि अरब एकता फिर से उभर रही है।
    - भारत, जिसका सऊदी अरब, UAE, कतर, ओमान और कुवैत में गहरा आर्थिक हित है, क्षेत्रीय चिंताओं के प्रति उदासीन नहीं दिख सकता।
    - भारत को भारत–GCC FTA वार्ता जैसे मंचों में अपनी भागीदारी बढ़ानी पड़ सकती है, और द्विपक्षीय संबंधों से आगे बढ़कर रणनीतिक संवादों का विस्तार करना होगा।

आगे की राह

- भविष्य में तनाव बढ़ने से भारत को मुश्किल का सामना करना पड़ सकता है, क्योंकि इज़राइल और अरब साझेदार दोनों ही समर्थन की संभावना करेंगे।
- वर्तमान स्थिति लेन-देन संबंधी कूटनीति की सीमाओं को उजागर करती है—भारत को मूल्यों और हितों के बीच संतुलन बनाना होगा।

Source: TH

व्यापार वृद्धि के उत्प्रेरक के रूप में कृत्रिम बुद्धिमत्ता

संदर्भ

- विश्व व्यापार संगठन (WTO) की वर्ल्ड ट्रेड रिपोर्ट 2025 में पाया गया है कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) में आगामी 15 वर्षों में वैश्विक व्यापार को लगभग 40 प्रतिशत तक बढ़ाने की क्षमता है, बशर्ते कि महत्वपूर्ण नीतिगत और अवसंरचनात्मक अंतरालों को दूर किया जाए।

व्यापार-आधारित विकास के प्रेरक के रूप में AI

- **व्यापार सुविधा:** WTO के सिमुलेशन के अनुसार, लॉजिस्टिक्स और कस्टम्स में AI व्यापार लागत को 15% तक कम कर सकता है।
- **उत्पादकता में वृद्धि:** AI-संचालित स्वचालन विनिर्माण और सेवाओं में दक्षता को बढ़ाता है, जिससे प्रतिस्पर्धात्मकता में विस्तार होता है।
- **डिजिटली डिलीवेरेबल सेवाएं:** लीगल-टेक, AI-संचालित कोडिंग, टेलीमेडिसिन और ई-लर्निंग जैसी सेवाएं 2040 तक 40% से अधिक बढ़ने की संभावना है।
- **AI-सक्षम वस्तुएं:** चिप्स, सर्वर और सेंसर का व्यापार AI अर्थव्यवस्था की रीढ़ है, जिसका मूल्य 2023 में USD 2.3 ट्रिलियन था।

भारत के व्यापार परिवर्तन के लिए AI का उपयोग

- **सेवाओं के निर्यात को सुदृढ़ करना:** भारत ने 2023–24 में IT और IT-सक्षम सेवाओं का USD 250+ बिलियन मूल्य का निर्यात किया, जिससे वह डिजिटली डिलीवेरेबल सेवाओं में वैश्विक नेता बन गया।

- AI सॉफ्टवेयर समाधान, AI-संचालित स्वास्थ्य सेवा (टेलीमेडिसिन), फिनटेक, ई-लर्निंग और लीगल-टेक सेवाओं के निर्यात को बढ़ाकर भारत की प्रमुखता को सुदृढ़ कर सकता है।
- **विनिर्माण प्रतिस्पर्धात्मकता को बढ़ाना:** पूर्वानुमानित रखरखाव, गुणवत्ता नियंत्रण और आपूर्ति श्रृंखला अनुकूलन में AI भारतीय विनिर्माताओं को वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धा करने में सहायता कर सकता है।
    - 'मेक इन इंडिया' और PLI योजनाओं के साथ एकीकरण से भारत वैश्विक मूल्य श्रृंखलाओं (GVCs) में अधिक हिस्सेदारी प्राप्त कर सकता है।
- **कृषि व्यापार को बढ़ावा देना:** AI-सक्षम सटीक खेती, उपज पूर्वानुमान और लॉजिस्टिक्स अपव्यय को कम कर सकते हैं और कृषि उत्पादों में निर्यात प्रतिस्पर्धा को बढ़ा सकते हैं।
- **SMEs और स्टार्टअप्स को सशक्त बनाना:** अनुवाद, अनुपालन और बाजार खुफिया के लिए AI उपकरण भारतीय SMEs को अंतरराष्ट्रीय व्यापार में प्रवेश बाधाओं को पार करने में सहायता कर सकते हैं।
    - भारत में 6.3 करोड़ MSMEs के साथ, AI को अपनाने से उनके निर्यात में भागीदारी को काफी बढ़ाया जा सकता है।

भारत द्वारा उठाए गए कदम

- नीति आयोग की "#AIforAll" (2018) ने भारत की प्रथम व्यापक AI रणनीति प्रस्तुत की, जो स्वास्थ्य सेवा, कृषि, शिक्षा, स्मार्ट शहरों एवं स्मार्ट गतिशीलता पर केंद्रित थी।
- भारत सेमीकंडक्टर मिशन (ISM), जिसे 2021 में ₹76,000 करोड़ के आवंटन के साथ मंजूरी दी गई, का उद्देश्य चिप निर्माण, डिस्प्ले निर्माण और डिज़ाइन के लिए वित्तीय प्रोत्साहन प्रदान कर एक सुदृढ़ घरेलू सेमीकंडक्टर पारिस्थितिकी तंत्र विकसित करना है।
- इंडियाAI मिशन, ₹10,371.92 करोड़ के आवंटन के साथ, सार्वजनिक और निजी क्षेत्रों में रणनीतिक कार्यक्रमों एवं साझेदारियों के माध्यम से AI नवाचार को उत्प्रेरित करने वाला एक व्यापक पारिस्थितिकी तंत्र स्थापित करता है।

चुनौतियाँ

- **डिजिटल अंतर:** वैश्विक स्तर पर केवल 41% छोटे फर्म AI का उपयोग करते हैं, जबकि बड़े फर्मों में यह आंकड़ा 60% से अधिक है।
    - निम्न और निम्न-मध्यम आय वाले देशों में AI अपनाने की दर 33% से कम है।
- **आय लाभ में असमानता:** यदि अंतर नहीं समाप्त किया गया, तो उच्च-आय वाले देशों में 2040 तक आय में ~14% की वृद्धि हो सकती है, जबकि निम्न-आय वाले देशों को केवल ~8% लाभ मिलेगा।
- **नियामक विखंडन:** विभिन्न क्षेत्रों में AI नियमों की विविधता अनुपालन लागत को बढ़ाती है और वैश्विक व्यापार प्रवाह को विभाजित कर सकती है।
- **एकाग्रता का जोखिम:** कुछ बड़े फर्म AI विकास और अवसंरचना पर प्रभुत्वशाली हैं, जिससे एकाधिकार निर्भरता एवं व्यापार लाभों पर नियंत्रण की चिंता बढ़ती है।

आगे की राह घरेलू उपाय:

- ब्रॉडबैंड, क्लाउड अवसंरचना और सस्ती AI हार्डवेयर में निवेश करें।
- AI-संयुक्त उद्योगों के लिए श्रमिकों को तैयार करने हेतु राष्ट्रीय कौशल कार्यक्रम लागू करें।
- प्रतिस्पर्धा नीति यह सुनिश्चित करे कि एकाधिकार प्रभुत्व न हो।

वैश्विक सहयोग:

- AI मानकों, नैतिक नियमों और डेटा शासन ढांचे का सामंजस्य स्थापित करें।
- गरीब देशों के लिए WTO की क्षमता निर्माण को बढ़ाएं।
- डिजिटल विखंडन से बचने के लिए बहुपक्षीय सहमति को बढ़ावा दें।

Source: TOI

एनालॉग प्रयोग: पृथ्वी पर अंतरिक्ष का अनुकरण करने का प्रयास

संदर्भ

- भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (ISRO) मानव सहनशीलता की जांच, मिशन प्रोटोकॉल को परिष्कृत करने और तकनीकों को प्रमाणित करने के लिए एक श्रृंखला के एनालॉग प्रयोग (Gyanex) कर रहा है, क्योंकि भारत अपने प्रथम मानव अंतरिक्ष उड़ान मिशन की तैयारी कर रहा है, जो गगनयान कार्यक्रम के अंतर्गत होगा।

एनालॉग प्रयोगों के बारे में

- ये पृथ्वी-आधारित सिमुलेशन हैं जो अंतरिक्ष की भौतिक, मनोवैज्ञानिक और संचालन संबंधी परिस्थितियों का अनुकरण करते हैं।
- ये प्रयोग अंतरिक्ष यात्रियों एवं शोधकर्ताओं को सक्षम बनाते हैं:
  - सीमित, अंतरिक्ष यान जैसे वातावरण में रहने के लिए;
  - सख्त दिनचर्या का पालन करने और वैज्ञानिक कार्यों को करने के लिए;
  - संचार प्रोटोकॉल, संसाधन प्रबंधन और आपातकालीन प्रक्रियाओं का परीक्षण करने के लिए;
  - मानव अंतरिक्ष उड़ान के लिए प्रयोगशालाओं के रूप में कार्य करने के लिए, जिससे शोधकर्ता मनोवैज्ञानिक सहनशीलता, तनाव में निर्णय लेने और अप्रत्याशित परिस्थितियों के अनुकूलन का परीक्षण कर सकें।
- इन प्रयोगों और वास्तविक अंतरिक्ष मिशनों के बीच एकमात्र बड़ा अंतर गुरुत्वाकर्षण की उपस्थिति है, जिसे पृथ्वी पर दोहराना कठिन है।

ISRO के गगनयान एनालॉग प्रयोग (Gyanex)

- ये प्रयोग बेंगलुरु में एक स्थिर मॉक-अप सिम्युलेटर में किए जा रहे हैं, जिन्हें ISRO के ह्यूमन स्पेस फ्लाइट सेंटर (HSFC) द्वारा संचालित किया जा रहा है और ये चंद्रमा, मंगल एवं उससे आगे के भविष्य के मिशनों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं।
- ज्ञानेक्स-1 में, ग्रुप कैप्टन अंगद प्रताप एवं दो अन्य ने 10 दिन तक बंद वातावरण में बिताए, 11 वैज्ञानिक प्रयोग किए और केवल DRDO द्वारा विकसित भोजन पर निर्भर रहे।
- ये मिशन ISRO को निम्नलिखित पर डेटा एकत्र करने में सहायता करते हैं:
  - तनाव में चालक दल के व्यवहार;
  - अलगाव का स्वास्थ्य और प्रदर्शन पर प्रभाव;
  - ऑनबोर्ड सिस्टम और दिनचर्या की प्रभावशीलता।

गगनयान से आगे: अन्य एनालॉग मिशन

- ISRO ने लद्दाख में दो अतिरिक्त एनालॉग मिशन किए हैं, जो बाह्य ग्रहों के आवासों का अनुकरण करने के लिए डिज़ाइन किए गए हैं:
  - **लद्दाख ह्यूमन एनालॉग मिशन:** ठंडे, बंजर क्षेत्रों में आवास निर्माण पर केंद्रित, जो अंतरग्रहीय बेस स्टेशनों का अनुकरण करता है।
  - **त्सो कर वैली मिशन:** हिमालयन आउटपोस्ट फॉर प्लैनेटरी एक्सप्लोरेशन (HOPE) आवास का परीक्षण किया गया, जिसमें घाटी की मंगल जैसे परिस्थितियों का लाभ उठाया गया, जैसे उच्च UV, कम दबाव और खारे पर्माफ्रॉस्ट।

इन प्रयोगों के रणनीतिक उद्देश्य

- **मानव तैयारी:** अंतरिक्ष यात्रियों को दीर्घकालिक अंतरिक्ष यात्रा के लिए तैयार करना
- **प्रौद्योगिकी सत्यापन:** यथार्थवादी परिस्थितियों में उपकरणों और प्रोटोकॉल का परीक्षण करना
- **वैज्ञानिक अनुसंधान:** अंतरिक्ष जैसी परिस्थितियों में मानव स्वास्थ्य जोखिमों को समझना
- **वैश्विक प्रतिस्पर्धा:** अंतरिक्ष अन्वेषण में अंतरराष्ट्रीय मानकों की बराबरी करना

Source: IE

सेना द्वारा ड्रोन की संख्या में वृद्धि

समाचार में

- भारतीय सेना तीव्रता से अपने ड्रोन और काउंटर-ड्रोन क्षमताओं का विस्तार कर रही है, जिसमें कई इकाइयाँ सक्रिय हैं तथा प्रशिक्षण केंद्र स्थापित किए जा रहे हैं।

भारतीय सेना की योजनाएँ

- भारतीय सेना 19 प्रमुख प्रशिक्षण संस्थानों में ड्रोन प्रशिक्षण केंद्र स्थापित करने की योजना बना रही है, जिनमें भारतीय सैन्य अकादमी, इन्फैंट्री स्कूल एवं ऑफिसर्स ट्रेनिंग अकादमी शामिल हैं, ताकि सभी रैंकों के लिए ड्रोन प्रशिक्षण को मानक पाठ्यक्रम में शामिल किया जा सके।
- सेना प्रमुख जनरल उपेंद्र द्विवेदी ने घोषणा की कि प्रत्येक इन्फैंट्री बटालियन में एक ड्रोन प्लाटून होगा, आर्टिलरी इकाइयों को काउंटर-ड्रोन सिस्टम मिलेंगे, और नई प्रिसिशन बैटरियाँ गठित की जाएँगी, जो आधुनिक युद्ध में मानव रहित प्रणालियों के बढ़ते महत्व को दर्शाता है।

आवश्यकता और उद्देश्य

- विरोधी देशों द्वारा ड्रोन घुसपैठ में वृद्धि, विशेष रूप से ऑपरेशन सिंदूर के पश्चात, सुदृढ़ पहचान और निष्क्रियकरण प्रणालियों की आवश्यकता को दर्शाती है।
- ड्रोन अब एक मानक हथियार प्रणाली बन चुके हैं, जिससे विभिन्न आकारों के लगभग 1,000 ड्रोन और 600 प्रशिक्षण सिमुलेटर की आपातकालीन खरीद की गई है।
- ड्रोन युद्धक्षेत्र की जागरूकता, सटीक लक्ष्य भेदन और संचालन की पहुँच को बढ़ाते हैं।
- वर्तमान में ड्रोन निगरानी, युद्ध, लॉजिस्टिक्स और चिकित्सा निकासी के लिए अनिवार्य हो गए हैं।

चुनौतियाँ

- प्रशिक्षण, तैनाती और रखरखाव के लिए उच्च लागत एवं लॉजिस्टिक आवश्यकताएँ।
- साइबर सुरक्षा और इंटरऑपरेबिलिटी से संबंधित मुद्दे।
- ड्रोन उपयोग और मानवयुक्त संचालन के बीच संतुलन बनाना ताकि रणनीति प्रभावी रहे।
- तकनीक पर अत्यधिक निर्भरता से दीर्घकालिक तैयारी कमजोर हो सकती है।
- युद्ध और निगरानी में ड्रोन के सुरक्षित और नैतिक उपयोग को सुनिश्चित करना।

निष्कर्ष और आगे की राह

- भारतीय सेना का सैनिकों को ड्रोन से लैस करने और काउंटर-ड्रोन रक्षा को सुदृढ़ करने पर ध्यान देना तैयारियों में एक बड़ा बदलाव दर्शाता है, जो ड्रोन कौशल, उन्नत निगरानी और स्वदेशी नवाचार पर बल देता है ताकि मानव रहित युद्ध के भविष्य के लिए तैयारी की जा सके।
- सेना का लक्ष्य है कि 2027 तक सभी सैनिक ड्रोन संचालन में प्रशिक्षित हों, जिससे संगठनात्मक संरचना में बड़ा बदलाव आएगा और बटालियन स्तर पर UAV एवं काउंटर-UAV सिस्टम को शामिल किया जाएगा।

Source :IE

संक्षिप्त समाचार

सात प्राकृतिक विरासत स्थल यूनेस्को की संभावित सूची में सम्मिलित

संदर्भ

- भारत भर से सात प्राकृतिक विरासत स्थलों को यूनेस्को की विश्व धरोहर स्थलों की अस्थायी सूची में शामिल किया गया है, जिससे अस्थायी सूची में भारत की संख्या 62 से बढ़कर 69 हो गई है।

नए सम्मिलित स्थल

- **पंचगनी और महाबलेश्वर, महाराष्ट्र के डेक्कन ट्रैप्स:** ये स्थल विशाल डेक्कन ट्रैप्स का हिस्सा हैं और कोयना वन्यजीव अभयारण्य के अंदर स्थित हैं, जो पहले से ही एक यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल है।
- **सेंट मैरी द्वीप समूह की भूवैज्ञानिक विरासत, कर्नाटक:** अपनी दुर्लभ कॉलमनर बेसाल्टिक चट्टानों के लिए प्रसिद्ध, यह द्वीप समूह लेट क्रिटेशियस काल का है और लगभग 85 मिलियन वर्ष पुरानी भूवैज्ञानिक आभास प्रदान करता है।

- **मेघालयन युग की गुफाएँ, मेघालय:** मेघालय की अद्भुत गुफा प्रणालियाँ, विशेष रूप से मावमलूह गुफा, होलोसीन युग में मेघालयन युग के लिए वैश्विक संदर्भ बिंदु के रूप में कार्य करती हैं, जो महत्वपूर्ण जलवायु और भूवैज्ञानिक बदलावों को दर्शाती हैं।
- **नगा हिल ओफियोलाइट, नागालैंड:** ओफियोलाइट चट्टानों का एक दुर्लभ प्रदर्शन, ये पहाड़ियाँ महासागरीय क्रस्ट को महाद्वीपीय प्लेटों पर उठे हुए रूप में दर्शाती हैं—जो टेक्टोनिक प्रक्रियाओं और मिड-ओशन रिज डायनामिक्स की गहरी समझ प्रदान करती हैं।
- **एर्रा मट्टी डिब्बालु (लाल रेत की पहाड़ियाँ), आंध्र प्रदेश:** विशाखापत्तनम के पास स्थित ये दृश्यात्मक रूप से आकर्षक लाल रेत संरचनाएँ अद्वितीय पुरा-जलवायु और तटीय भू-आकृतिक विशेषताओं को प्रदर्शित करती हैं, जो पृथ्वी के जलवायु इतिहास एवं गतिशील विकास को उजागर करती हैं।
- **तिरुमला पहाड़ियों की प्राकृतिक विरासत, आंध्र प्रदेश:** एपार्चियन अनकंफॉर्मिटी और सिलाथोरनम (प्राकृतिक आर्च) को दर्शाने वाला यह स्थल पृथ्वी के 1.5 अरब वर्षों से अधिक के इतिहास का प्रतिनिधित्व करता है।
- **वर्कला क्लिफ्स, केरल:** केरल के तट के साथ स्थित ये सुंदर चट्टानें मियो-प्लायोसीन युग की वर्कल्ली संरचना को उजागर करती हैं, साथ ही प्राकृतिक झरनों और आकर्षक अपरदन भू-आकृतियों को भी प्रदर्शित करती हैं।

क्या आप जानते हैं?

- भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण भारत में यूनेस्को के विश्व धरोहर सम्मेलन के लिए नोडल एजेंसी है।
- भारत जुलाई 2024 में नई दिल्ली में विश्व धरोहर समिति के 46वें सत्र की मेजबानी करेगा।

Source: AIR

स्वस्थ नारी सशक्त परिवार अभियान

संदर्भ

- प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने मध्य प्रदेश में 'स्वस्थ नारी, सशक्त परिवार अभियान' और 8वें 'राष्ट्रीय पोषण माह' अभियान की शुरुआत की।

परिचय

- यह भारत में महिलाओं और बच्चों के लिए अब तक का सबसे बड़ा स्वास्थ्य जागरूकता अभियान है।
- **मंत्रालय:** स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय (MoHFW) तथा महिला और बाल विकास मंत्रालय (MoWCD) द्वारा संयुक्त रूप से संचालित।
- **उद्देश्य:** समुदाय स्तर पर महिलाओं के लिए रोकथाम, संवर्धन और उपचार आधारित स्वास्थ्य सेवाएँ प्रदान करना।
- **क्रियान्वयन:** देशभर में आयुष्मान आरोग्य मंदिरों, सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों (CHCs), जिला अस्पतालों और अन्य सरकारी स्वास्थ्य संस्थानों में 10 लाख से अधिक स्वास्थ्य शिविरों का आयोजन किया जाएगा।
- **महत्व:** यह अभियान गैर-संचारी रोगों, एनीमिया, तपेदिक और सिकल सेल रोग की स्क्रीनिंग, प्रारंभिक पहचान एवं उपचार संबंधी व्यवस्था को सुदृढ़ करेगा, साथ ही मातृ, शिशु तथा किशोर स्वास्थ्य को भी बढ़ावा देगा।

Source: PIB

ECI द्वारा EVM मतपत्रों को अधिक पठनीय बनाने के लिए दिशानिर्देशों में संशोधन

संदर्भ

- भारत निर्वाचन आयोग (ECI) ने EVM मतपत्र के डिज़ाइन और मुद्रण के लिए चुनाव आचरण नियम, 1961 के नियम 49B के अंतर्गत वर्तमान दिशानिर्देशों को संशोधित किया है, ताकि उनकी स्पष्टता एवं पठनीयता को बेहतर बनाया जा सके।

परिचय

- यह पहल विगत 6 महीनों में ECI द्वारा चुनाव प्रक्रियाओं को सुव्यवस्थित करने और मतदाताओं की सुविधा बढ़ाने के लिए उठाए गए 28 पहलों के अनुरूप है।
- अब उम्मीदवारों की तस्वीरें रंगीन रूप में छपेंगी, जो पहले काले-सफेद या बिना फोटो वाले संस्करणों की जगह लेंगी, ताकि पहचान अधिक स्पष्ट हो सके।
- उन्नत ईवीएम बैलट पेपर आगामी चुनावों में उपयोग किए जाएंगे, जिसकी शुरुआत बिहार से होगी।

- **नियम 49B** यह नियम रिटर्निंग ऑफिसर द्वारा वोटिंग मशीनों की तैयारी का प्रावधान करता है।

Source: PIB

अंतर्राष्ट्रीय आपराधिक न्यायालय

समाचार में

- कतर ने अंतर्राष्ट्रीय अपराध न्यायालय (ICC) के अध्यक्ष से भेंट की है ताकि अपने क्षेत्र पर हमास नेताओं को निशाना बनाकर किए गए इज़राइली हमले के बाद इज़राइल के विरुद्ध कानूनी कार्रवाई की जा सके।

क्या आप जानते हैं?

- कतर एक पर्यवेक्षक राज्य होने के कारण सीधे ICC को मामले नहीं भेज सकता, इसलिए वह इज़राइल को जवाबदेह ठहराने के लिए सभी कानूनी और राजनयिक विकल्पों की खोज कर रहा है।
- अरब और इस्लामी गुटों ने सदस्य देशों से इज़राइल की कार्रवाइयों को रोकने के लिए कानूनी उपाय अपनाने का आग्रह किया है।

अंतर्राष्ट्रीय अपराध न्यायालय (ICC)

- यह विश्व का प्रथम स्थायी न्यायालय है जो व्यक्तियों के विरुद्द्ध नरसंहार, युद्ध अपराध, मानवता के विरुद्ध अपराध और आक्रामकता जैसे गंभीर अपराधों की जांच एवं मुकदमा चलाता है।
- इस न्यायालय का मुख्यालय नीदरलैंड्स के हेग शहर में है।
- इसके पास कोई पुलिस बल नहीं है और यह गिरफ्तारी, स्थानांतरण और सजा लागू करने के लिए विश्व के देशों पर निर्भर करती है।
- यह संयुक्त राष्ट्र के साथ सहयोग करती है, जो इसे मामले भेज सकता है।
- इसका उद्देश्य अपराधियों को जवाबदेह ठहराना और भविष्य के अपराधों को रोकने में सहायता करना है, यह राष्ट्रीय अदालतों के साथ मिलकर कार्य करती है, उन्हें प्रतिस्थापित नहीं करती।
- यह रोम संविधि द्वारा शासित होती है और वैश्विक दंडहीनता के विरुद्ध संघर्ष में अंतिम उपाय के रूप में कार्य करती है।

Source :TH

ब्लू पोर्ट्स

संदर्भ

- मत्स्य विभाग (DoF) ने भारत में ब्लू पोर्ट अवसंरचना को सुदृढ़ करने के लिए संयुक्त राष्ट्र के खाद्य और कृषि संगठन (FAO) के साथ एक तकनीकी सहयोग कार्यक्रम (TCP) समझौते पर हस्ताक्षर किए हैं।
  - TCP निवेश परियोजनाओं को डिज़ाइन करने तथा पर्यावरणीय, सामाजिक एवं आर्थिक चुनौतियों का समाधान करने के लिए रणनीतिक और संचालनात्मक उपकरण प्रदान करेगा।

ब्लू पोर्ट्स फ्रेमवर्क

- मत्स्य विभाग (DoF) ब्लू पोर्ट्स फ्रेमवर्क के अंतर्गत स्मार्ट और एकीकृत मछली पकड़ने वाले बंदरगाहों के विकास का नेतृत्व कर रहा है, जो तकनीकी नवाचार को पर्यावरणीय संरक्षण के साथ संतुलित करता है।
- तीन पायलट बंदरगाह—वणकबारा (दीव), कराईकल (पुडुचेरी), और जखाऊ (गुजरात)—को ₹369.8 करोड़ के कुल निवेश के साथ स्वीकृत किया गया है।
- इन बंदरगाहों का उद्देश्य मछली पकड़ने के बाद की मत्स्य अवसंरचना का आधुनिकीकरण करना है, जिससे सुनिश्चित हो सके:
  - मछली पकड़ने की सुरक्षित और अधिक स्वच्छ हैंडलिंग।
  - बंदरगाह संचालन की अधिक स्वच्छ और कुशल प्रक्रिया।
  - मछुआरा समुदायों के लिए बेहतर सेवाएँ और आजीविका।
- प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना (PMMSY) के अंतर्गत समर्थित यह पहल स्मार्ट तकनीकों जैसे IoT उपकरण, सेंसर नेटवर्क, सैटेलाइट संचार और डेटा एनालिटिक्स को शामिल करती है, जिससे बंदरगाह संचालन को सुव्यवस्थित किया जा सके तथा वास्तविक समय में निर्णय लेने की क्षमता प्राप्त हो।

खाद्य और कृषि संगठन (FAO)

- FAO संयुक्त राष्ट्र की एक विशेषीकृत एजेंसी है जो भूख को समाप्त करने और खाद्य सुरक्षा सुधारने के लिए अंतरराष्ट्रीय प्रयासों का नेतृत्व करती है।
- **स्थापना:** 16 अक्टूबर 1945
- **सदस्य**: FAO में 195 सदस्य हैं, जिनमें 194 देश और यूरोपीय संघ शामिल हैं।
- **मुख्यालय**: रोम, इटली

Source: PIB

भारत-AI प्रभाव शिखर सम्मेलन 2026

समाचार में

- इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय (MeitY) ने आधिकारिक रूप से इंडिया-AI इम्पैक्ट समिट 2026 के लिए लोगो और प्रमुख पहलों का अनावरण किया।

परिचय

- यह एक वैश्विक मंच है जो नीति निर्माताओं, नवप्रवर्तकों, शोधकर्ताओं और उद्योग जगत के नेताओं को एकत्र करता है ताकि मानवता एवं पृथ्वी के लिए AI की परिवर्तनकारी क्षमता को प्रदर्शित किया जा सके।
- यह अपने प्रकार का प्रथम समिट है जिसे ग्लोबल साउथ राष्ट्र द्वारा आयोजित किया जा रहा है, जिससे भारत को जिम्मेदार एवं समान AI अपनाने में एक विचारशील नेता के रूप में स्थापित किया जा रहा है।
- यह डेटा, कंप्यूट और मॉडल जैसे AI संसाधनों तक पहुँच को लोकतांत्रिक बनाएगा—सुरक्षित और विश्वसनीय इकोसिस्टम को बढ़ावा देगा।

मार्गदर्शक सिद्धांत (तीन सूत्र)

- **People (जन):** मानव गरिमा, सांस्कृतिक समावेशन और समान अवसरों के लिए AI।
- **Planet (पृथ्वी):** संसाधन-कुशल AI जो सततता और जलवायु कार्रवाई को समर्थन देता है।
- **Progress (प्रगति):** AI संसाधनों का लोकतंत्रीकरण और लाभों का समान वितरण।

प्रमुख पहलें

- **उड़ान ग्लोबल AI पिच फेस्ट:** भारत और विदेशों के स्टार्टअप्स की प्रदर्शनी।
- **YuvaAI इनोवेशन चैलेंज और AI by HER:** युवाओं और महिलाओं द्वारा संचालित नवाचार को बढ़ावा देना।
- **ग्लोबल इनोवेशन चैलेंज फॉर ऑल:** जनहित समस्याओं के लिए क्राउड-सोर्स्ड AI समाधान।
- **रिसर्च सिम्पोजियम:** अत्याधुनिक AI अनुसंधान पर सहयोग।

Source: AIR

डीपसीक-R1 AI मॉडल की रिइनफोर्समेंट लर्निंग

समाचार में

- डीपसीक-AI टीम ने R1 नामक एक मॉडल विकसित किया है।

डीपसीक-R1 AI मॉडल

- R1 AI मॉडल रिइनफोर्समेंट लर्निंग के माध्यम से तर्क करना सीखता है—अर्थात् सही उत्तरों पर सकारात्मक प्रतिक्रिया के साथ प्रयास और त्रुटि की प्रक्रिया—बिना मानव द्वारा दिए गए तर्क के चरणों के।
- बेस मॉडल (R1-Zero) से शुरू होकर, इसने गणित और कोडिंग कार्यों में उल्लेखनीय सुधार किया, यहाँ तक कि एक कठिन गणित परीक्षा में औसत हाई स्कूल छात्रों से भी बेहतर प्रदर्शन किया।
- इस मॉडल ने आत्म-सुधार और समस्या की कठिनाई के आधार पर तर्क की लंबाई को समायोजित करने जैसे चिंतनशील व्यवहार विकसित किए।
- हालाँकि भाषा की सुसंगतता और सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए कुछ मानव हस्तक्षेप बना रहा, यह दृष्टिकोण महंगे मानव-लेबल वाले डेटा पर निर्भरता को कम करता है।

महत्व

- AI को तर्क करना सिखाना लंबे समय से एक चुनौती रहा है, क्योंकि तर्क में तथ्यों का स्मरण रखने से आगे

बढ़कर चरण-दर-चरण समस्या समाधान और आत्म-सुधार शामिल होता है।

- GPT-4 जैसे बड़े भाषा मॉडल ने कुछसीमा हद तक तर्क क्षमता दिखाई है, जो प्रायः मानव उदाहरणों द्वारा निर्देशित होती है—यह प्रक्रिया महंगी होती है और रचनात्मकता को सीमित करती है।

- हालिया सफलता यह संकेत देती है कि यदि सही प्रोत्साहन डिज़ाइन किए जाएँ, तो AI में तर्क स्वाभाविक रूप से विकसित हो सकता है, जिससे अधिक रचनात्मक और स्वतंत्र समस्या समाधान संभव हो सकता है—हालाँकि खुले-आख्यान कार्यों एवं सुरक्षित उपयोग सुनिश्चित करने की चुनौतियाँ अभी भी बनी हुई हैं।

Source :TH

पीले-कलगी वाले कॉकटू((Yellow-crested Cockatoos))

समाचार में

- हाल ही में पीले-कलगी वाले काकाटू (Yellow-crested Cockatoos) को हांगकांग के शहरी पार्कों में एक अप्रत्याशित आश्रय मिला है, जहाँ वे लगभग 2,000 वयस्क पक्षियों की वैश्विक जंगली जनसंख्या का लगभग 10% प्रतिनिधित्व करते हैं।

पीले-कलगी वाले काकाटू (Cacatua sulphurea)

- यह विभिन्न प्रकार के वन क्षेत्रों, झाड़ियों और कृषि क्षेत्रों में पाया जाता है।

- यह प्राथमिक वनों की तुलना में खुले आवासों जैसे वन-सवाना को अधिक पसंद करता है।
  - यह इंडोनेशिया और ईस्ट तिमोर का मूल निवासी है।
- यह मृत या सड़ते हुए पेड़ों की दरारों या पहले से बने छेदों में घोंसला बनाता है।
- इसका आहार कई पौधों की प्रजातियों के फल, फूल और पत्तियों से बना होता है।
- **IUCN रेड स्थिति:** अति संकटग्रस्त (Critically Endangered)

Source :TH

पैसिफिक रीच अभ्यास

संदर्भ

- भारतीय नौसेना का नवीनतम स्वदेशी रूप से डिज़ाइन किया गया पोत INS निस्तार सिंगापुर में आयोजित बहुराष्ट्रीय अभ्यास पैसिफिक रीच 2025 में भाग ले रहा है।

अभ्यास के बारे में

- पैसिफिक रीच 2025 अभ्यास, जिसकी मेज़बानी सिंगापुर कर रहा है, इसमें 40 से अधिक देशों की भागीदारी होगी—कुछ सक्रिय प्रतिभागी के रूप में और कुछ पर्यवेक्षक के रूप में।
- यह अभ्यास मुख्य रूप से दो चरणों में आयोजित किया जाएगा: बंदरगाह चरण और समुद्री चरण।
- इस द्विवार्षिक अभ्यास की शुरुआत 1996 में हुई थी और इसकी मेज़बानी भाग लेने वाले देशों द्वारा बारी-बारी से की जाती है।

Source: AIR